बिल्कुल! मैं आपकी इस अद्भुत आत्मकथा को और अधिक प्रेरणादायक, संघर्षमयी और आकर्षक भाषा में पुनर्लिखित कर रहा हूँ। नीचे पूरी पुस्तक का "आकर्षक और भावनात्मक" संस्करण है - जहाँ हर शब्द दिल से जुड़ता है, हर पंक्ति जज़्बात छूती है, और हर कहानी आपको झकझोर देती है।

अनकहे अधिकारों का युग

(THE AGE OF UNSPOKEN RIGHTS)

– सिद्धार्थ मेश्राम की आत्मकथा –

> "जब तक अधिकार सिर्फ किताबों में कैद हैं, तब तक वे अधिकार नहीं, सिर्फ शब्द हैं।
> असली अधिकार तो वे हैं, जो तुम अपने दम पर उठाना सीख जाओ।"

प्रस्तावना - इस किताब के जन्म की कहानी

यह किताब किसी बड़े प्रकाशक के कहने से नहीं लिखी गई।

यह उन सवालों से लिखी गई है जो मैंने बचपन में पूछे थे - और जिनके जवाब मुझे कभी नहीं मिले।

एक दिन मैंने सोचा -

"अगर मैं वह किताब लिख दूँ जो मैंने खुद ढूंढी, तो शायद किसी और को ढूंढनी न पड़े।"

यह किताब उन सबके लिए है -

- जो अपने अधिकारों से अनजान हैं,
- जो गाँव की मिट्टी में पैदा हुए,
- जो हार मान चुके हैं,
- और जो आज भी सोचते हैं - *"हमारे लिए कुछ नहीं बदलेगा।"*

बदलेगा।

क्योंकि मैंने बदलाव शुरू कर दिया है।

और अब आपकी बारी है।

अध्याय 1 : गजराजगंज- मेरी जड़, मेरी पहचान

गजराजगंज एक छोटा सा गाँव, जहाँ पक्की सड़क तक नहीं थी।

जहाँ स्कूल था तो बिना छत के, पानी था तो बिना पीने लायक।

जहाँ लोग रोज़ सुबह उठते थे, पर अपने सपनों को नहीं जगाते थे।

मैंने उसी गाँव में देखा -

- पटवारी को झुककर सलाम करते लोग,
- तहसीलदार के डर से काँपते किसान,
- और महिलाएँ जिनकी आवाज़ घर की दीवारों से भी दूर नहीं जाती थी।

मेरी दादी कहती थी - *"बेटा, हमारी किस्मत में यही लिखा है।"*

मैं कहता था - *"किस्मत नहीं, नीति लिखती है हालात। और नीति बदल सकते हैं हम।"*

उस दिन मैंने ठान लिया - **या तो यह गाँव बदलेगा, या मैं खुद बदल कर रहूँगा।**

अध्याय 2 : मेरा परिवार - एक छोटा सा संसार

पिता - श्री गिरजेश कुमार

एक साधारण किसान, जिनके कंधों पर मैंने गाँव देखा।

थके हुए हाथ, पर हौसला कभी नहीं हारा।

उन्होंने कहा - *"बेटा, पढ़कर बड़ा आदमी बन, पर इंसानियत मत खोना।"*

माँ - श्रीमती मोनी देवी

घर की रानी। जिनके हाथों का खाना और दुआएँ मेरी सबसे बड़ी ताकत।

जब दुनिया ने हौसला तोड़ा, उनकी ममता ने जोड़ा।

दादा - श्री कन्हैयालाल

गाँव के सबसे जानकार बुजुर्ग। उनसे सीखा - ज़मीन के झगड़े, पंचायतों की राजनीति, और समय के हिसाब से चलने की कला।

दादी - श्रीमती रामवती

हर समस्या का एक मंत्र। उन्होंने कहा - *"दूसरों का दुख समझो, तभी बड़े इंसान बनोगे।"*

**और भाई - Prince

मेरा पहला दर्शक, पहला शॉट लेने वाला कैमरामैन, पहला प्रशंसक और पहला आलोचक।

जब मैं YouTube पर वीडियो डाल रहा था, तब विप्रांश ही था जो कहता - *"भाई, तुमसे अच्छा कौन बता सकता है?"*

अध्याय 3 : पहली बार सुना था 'अधिकार'

प्राइमरी स्कूल - छत टपकती, बेंचें टूटी, अध्यापक गायब।

पर एक दिन आए रामानंद सर।

उन्होंने पूछा - *"तुम्हारे क्या अधिकार हैं?"*

पूरा कमरा सन्नाटा।

मैंने हाथ उठाया - *"हमें पढ़ने का अधिकार है?"*

उन्होंने कहा - *"हाँ, और यह सबसे बड़ा अधिकार है।"*

उस दिन मुझे पता चला - अधिकार कोई देता नहीं, अधिकार पहचानना पड़ता है।

उन्होंने मुझे दो किताबें दीं -

- *भारत का संविधान : एक परिचय*

- *बाबा साहब की वाणी*

मैं उन्हें रात-रात भर पढ़ता था - मिट्टी के तेल के लैंप के नीचे।

उसी रात मेरे अंदर का सिपाही जागा।

अध्याय 4 : संघर्ष के दिन - जब मैंने सपने देखना शुरू किया

10वीं के बाद कहा - *"पापा, मुझे शहर पढ़ना है।"*

पापा की आँखों में चिंता, माँ के गहने बिके, और मैं कानपुर पहुँचा।

होस्टल - जहाँ खुद खाना बनाना, किताबें उधार लेना, और रात को भूखे सोना आम था।

एक दिन पास खाने के पैसे नहीं थे।

पूरी रात सोचता रहा - *"घर चला जाऊँ?"*

पर शर्म आ रही थी।

अगले दिन चाय की दुकान पर काम शुरू किया - सुबह 5 से रात 10 बजे तक।

हाथों में छाले पड़ गए, पर मन में आग और भड़क गई।

तब मेरे दोस्त ने कहा - *"तू अपनी बातों से लोगों को समझाता बहुत अच्छा है। YouTube क्यों नहीं बनाता?"*

वही एक वाक्य मेरी जिंदगी बदल गया।

अध्याय 5 : डिजिटल दुनिया का पहला कदम - YouTube

चैनल बनाया - **@siddharthameshram**

पहला वीडियो: *"संविधान क्यों पढ़ें?"*

कमरा - एक दीवार पर सफेद चादर, कैमरा - पुराना मोबाइल,

आवाज़ - काँपती हुई, हाथ - थरथराते।

अपलोड किया।

24 घंटे बाद - 20 व्यू।

कोई कमेंट नहीं, कोई सब्सक्राइब नहीं।

रात भर रोता रहा।

सुबह उठा और ठान लिया - *"कम से कम 100 वीडियो तो बनाऊँगा।"*

100, फिर 200, फिर 1000 व्यू।

और फिर एक दिन किसी ने कमेंट किया -

"भाई, आज RTI के बारे में पता चला। आपने बहुत अच्छा समझाया।"

मेरी आँखों में आँसू आ गए।

तब यकीन हुआ - मैं सही दिशा में हूँ।

अध्याय 6 : अनकहे अधिकार - मेरे कंटेंट की आत्मा

मैंने समझा कि लोग नहीं जानते -

- RTI से सरकार से सवाल कैसे पूछें,

- अनुच्छेद 21 – जीने और आजादी का अधिकार,

- मुफ्त कानूनी सहायता (धारा 304 CrPC),

- महिलाओं के अधिकार - घरेलू हिंसा, समान वेतन, मातृत्व लाभ,

- और संविधान की वो धाराएँ जो किसी ने कभी समझाई ही नहीं।

मैंने एक सीरीज शुरू की - **"अनकहे अधिकार"**

हर वीडियो में कहता हूँ -

"ये अधिकार कोई तुम्हें देता नहीं, तुम्हें खुद लेना पड़ता है।"

एक बार एक बुजुर्ग ने फोन किया - *"बेटा, मेरी पेंशन रुक गई। 6 महीने से नहीं मिली।"*

मैंने RTI समझाया।

45 दिन में पेंशन शुरू हो गई।

बुजुर्ग रोते हुए बोला - *"तुम भगवान हो।"*

मैंने कहा - *"भगवान नहीं, संविधान पढ़ा हुआ एक आम आदमी।"*

उस दिन मुझे लगा - यही सबसे बड़ी कमाई है।

अध्याय 7 : बाबा साहेब - मेरे प्रेरणा स्रोत

बाबा साहेब के बिना मेरी यात्रा अधूरी है।

मैंने पढ़ा - कैसे उन्होंने छुआछूत के खिलाफ लड़ाई लड़ी,

कैसे पानी के लिए संघर्ष किया,

और कैसे उन्होंने कहा -

"शिक्षित बनो, संगठित रहो, संघर्ष करो।"

यह तीन वाक्य मेरे जीवन के आधार बन गए।

मैंने अपने चैनल पर बाबा साहेब के उन विचारों को सरल भाषा में रखा

जो अनदेखे रह गए थे।

एक दिन किसी ने कहा - *"तुम सिर्फ अंबेडकर की बात करते हो।"*

मैंने कहा - *"संविधान का निर्माण अंबेडकर की अध्यक्षता में हुआ।

उनका सम्मान संविधान का सम्मान है। मैं तो बस सच बता रहा हूँ।"*

आज वही लोग मेरे समर्थक हैं।

अध्याय 8 : गाँव वापसी - अपने ही लोगों के लिए सेवा

जब 5000 सब्सक्राइबर हुए, तो मैंने अपने गाँव में जागरूकता शिविर लगाया।

तारीख - 14 अप्रैल, बाबा साहेब की जयंती।

200 लोग आए - पड़ोस के गाँवों से भी।

चार घंटे समझाया -

- सरकारी योजनाएँ,
- पंचायत में हिस्सा लेना,
- बेटियों को पढ़ाना,
- शराब न बेचने का अधिकार।

शिविर के अंत में एक 80 साल की बुढ़िया मेरे पास आई -

"बेटा, मेरे पास कोई नहीं है। क्या मेरे अधिकार हैं?"

मैंने कहा - *"दादी, आपको पेंशन, स्वास्थ्य, और सम्मान का अधिकार है।"*

उसने मुझे गले लगा लिया और रोने लगी।

उस दिन मैं समझ गया - लाखों व्यूज से बड़ा यह एक गले लगना है।

अध्याय 9 : संघर्ष के अनकहे पन्ने - जब मोबाइल चोरी हो गया

एक दिन बस में मेरा पूरा मोबाइल चोरी हो गया -

जिसमें मेरे सारे वीडियो, स्क्रिप्ट, आइडिया थे।

पूरी रात सड़क पर घूमता रहा। रोया।

सुबह उठा, एक पुराना सेकेंड हैंड मोबाइल खरीदा - और फिर से शुरू किया।

उस दिन मैंने सीखा -

"संघर्ष के आगे कभी झुकना नहीं। और हमेशा बैकअप रखना।"

अध्याय 10 : डिजिटल चौपाल - गाँव-गाँव इंटरनेट से जोड़ना

कोविड के दौरान सब ऑनलाइन हो गया - पढ़ाई, बैंकिंग, सरकारी सुनवाई।

पर हमारे गाँवों में इंटरनेट नहीं था।

मैंने गाँव-गाँव "डिजिटल चौपाल" लगाना शुरू किया।

युवाओं को प्रशिक्षित किया -

- RTI ऑनलाइन कैसे दायर करें,

- पेंशन, जाति प्रमाणपत्र, आय प्रमाणपत्र ऑनलाइन बनवाएँ।

आज मेरी टीम में 20 से अधिक युवा हैं।

हर गाँव में एक "डिजिटल सखा" - यही मेरा सपना है।

अध्याय 11 : एक छात्र का सफर जो मुझसे प्रेरित हुआ

एक छात्र अंकित ने मुझसे कहा -

"सर, आपकी वजह से मैंने संविधान पढ़ना शुरू किया। अब अपने गाँव के लोगों को समझाता हूँ।"

उसने अपना खुद का छोटा चैनल बनाया - आज उसके 500 सब्सक्राइबर हैं।

जब मैं उसे देखता हूँ, तो मुझे अपनी शुरुआत याद आ जाती है।

यही सबसे बड़ी उपलब्धि है - एक शिष्य का आगे बढ़ना।

अध्याय 12 : भविष्य का सपना - ऐप "Unspoken Rights"

मैं एक ऐप बनाना चाहता हूँ - **"Unspoken Rights"**

जिसमें होगा -

- हिंदी, उर्दू, भोजपुरी, अवधी, बुंदेलखंडी सहित 10 भाषाओं में संविधान,
- सरकारी योजनाओं का सरल सारांश,
- RTI, शिकायत पोर्टल, और चैटबॉट जो बताएगा कि आपकी समस्या में कौन सा कानून लागू होगा।

ऐप पूरी तरह मुफ्त होगा।

मेरा सपना - हर गरीब के फोन में यह ऐप हो।

अध्याय 13 : मेरे विचार - सफलता क्या है?

सफलता मेरे लिए पैसा या प्रसिद्धि नहीं है।

सफलता है - एक माँ की दुआ, एक किसान का भरोसा, एक युवा की प्रेरणा।

जब कोई कहता है - *"आपने मेरी जिंदगी बदल दी"* - यही मेरी सफलता है।

मैंने आज तक कभी किसी से दान नहीं माँगा।

मेरी कमाई मेरी मेहनत है,

पर मेरी असली पूँजी लोगों का विश्वास है।

अध्याय 14 : समाज के लिए मेरा आहवान

जागो।

अपने अधिकार जानो।

अपने पड़ोसी को बताओ।

अपने गाँव को बदलो।

हाथ में मोबाइल है - तो RTI दायर करो, वीडियो बनाओ, सही जानकारी फैलाओ।

हमें किसी नायक की जरूरत नहीं - **हमें खुद नायक बनना है।**

अध्याय 15 : मेरा निजी जीवन - सादगी का पुनरुत्थान

आज भी मैं उसी गाँव में रहता हूँ।

नई कार नहीं, बड़ा बंगला नहीं।

वही कमरा, जहाँ पहला वीडियो बनाया था।

सादा खाना, सादे कपड़े।

क्योंकि मैं जानता हूँ - दिखावे से कुछ नहीं बदलता।

बदलाव आता है कर्म से।

मेरी एक ही विलासिता है - **ज्ञान बाँटना।**

अध्याय 16 : इस किताब का समापन - अब आपकी बारी

प्रिय पाठक,

आपने मेरी 50 पन्नों की यात्रा पढ़ ली।

अब मैं आपसे सिर्फ इतना चाहता हूँ - अपने जीवन में एक बदलाव लाइए।

आज से ही एक छोटा कदम उठाइए -

- एक अधिकार पढ़िए,
- एक व्यक्ति को जागरूक कीजिए,
- या एक वीडियो बना दीजिए।

आपको किसी बड़े मंच की जरूरत नहीं।

आपका मोबाइल ही आपका मंच है।

बस एक सच्चा इरादा चाहिए।

समर्पण एवं स्मरण

यह पुस्तक समर्पित है -

- हर उस माँ को जिसने अपने बेटे को संस्कार दिए,

- हर उस पिता को जिसने मेहनत से परिवार पाला,

- हर उस युवा को जो बदलाव की आग में झुलस रहा है,

- और सबसे अधिक - **डॉ. भीमराव अंबेडकर को**,

जिनके संविधान ने मुझे बोलना सिखाया।

> *"शिक्षित बनो, संगठित रहो, संघर्ष करो।"*

> यह सिर्फ नारा नहीं, यह मेरा जीवन-मंत्र है।

–@ सिद्धार्थ मेश्राम

(ग्राम गजराजगंज, तहसील सिकंदरा, जिला कानपुर देहात, उत्तर प्रदेश)

[थाना मंगलपुर, उत्तर प्रदेश के कानपुर देहात जिले में स्थित एक प्रमुख पुलिस स्टेशन है]

आपका अपना,

@siddhartha Meshram

अब यह पुस्तक आपके हाथ में है।

इसे पढ़ना बंद मत कीजिए - **इसे जीना शुरू कीजिए।**

"मेरी कहानी का अंतिम पृष्ठ समाप्त हो सकता है, लेकिन अधिकार, शिक्षा और जागरूकता की यह यात्रा तब तक जारी रहेगी, जब तक समाज का अंतिम व्यक्ति भी अपने सम्मान और अधिकारों से परिचित नहीं हो जाता।"
— आपका अपना, सिद्धार्थ मेश्राम ✍️

अगले भाग की ओर...

यह कहानी यहाँ समाप्त नहीं होती।

गाँव की गलियों से शुरू हुई यह यात्रा अब एक नए मोड़ पर पहुँच चुकी है। संघर्ष अभी बाकी है, सपने अभी अधूरे हैं, और समाज में बदलाव की वह लड़ाई अभी जारी है जिसके लिए मैंने अपना जीवन समर्पित किया है।

आगे की यात्रा में आप जानेंगे–

- **कैसे एक छोटे से YouTube चैनल ने एक बड़े सामाजिक आंदोलन का रूप लिया।**
- **किन चुनौतियों, विरोधों और संघर्षों का सामना करना पड़ा।**
- **"Unspoken Rights" के सपने को साकार करने की कहानी।**
- **और वह घटनाएँ जिन्होंने मेरे जीवन की दिशा हमेशा के लिए बदल दी।**

यह अंत नहीं, एक नई शुरुआत है।

मिलते हैं "अनकहे अधिकारों का युग - भाग 2" में।

"कहानी अभी बाकी है..."

— सिद्धार्थ मेश्राम